E-Learning Study Material

By Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA
V.K.S. UNIVERSITY, ARA, BIHAR

B.A. Part 1st Economics Hons
Paper - 1st

Definitions of Consumar Surplus

जब हम कोई वस्तु खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए हम सोच लेते हैं कि कितना मूल्य देंगे। लेकिन ऐसा होता है कि जब हम बाजार में जाते हैं तो किसी वस्तु के लिए हम जितना मूल्य देने को तैयार रहते हैं उससे कम मूल्य पर ही वह वस्तु मिल जाती है। इस प्रकार हमें कुछ बचत हो जाती है जिसे उपभोक्ता की बचत कहते हैं। उदाहरण के लिए, मान लिया जाय कि हमें एक कमीज खरीदनी है और उसके लिए हम 50 रुपये खर्च करने को तैयार हैं लेकिन जब हम बाजार में जाते हैं तो वह कमीज हमें 40 रुपये में मिल जाती है। इस प्रकार हमें 10 रुपये के बराबर उपभोक्ता की बचत प्राप्त होती। दूसरे शब्दों में उपभोक्ता की बचत = जो मूल्य हम देने को तैयार रहते हैं - जो मूल्य हम वास्तव में देते हैं।

प्रो० मार्शल का मानना है कि उपभोक्ता की बचत का उदय विभिन्न अवसरों (opportunities) वातावरणों (environments)

अथवा स्थितियों (Conjunctures) के कारण होता है। जिन वस्तुओं के लिए हम अधिक मूल्य दे सकते हैं वे वस्तुएँ आर्थिक तथा तकनीकी विकास के कारण हमें कम ही मूल्य पर मिल जाती है। यह वास्तव में स्थिति, वातावरण अथवा अवसर का ही परिणाम है कि आज हम कम खर्च पर आराम के साथ लम्बी यात्रा कर सकते हैं। इसी प्रकार नमक दियासलाई, समाचारपत्र आदि वस्तुएँ हमें कम मूल्य पर मिल जाती हैं। हमारे दैनिक जीवन में अनेक ऐसे उदाहरण मिलेंगे जब हम किसी वस्तु के लिए अधिक मूल्य देने को तैयार रहते हैं किन्तु परिस्थितिवश वह वस्तु हमें कम ही कीमत पर मिल जाती है। इसी को उपभोक्ता की बचत प्राप्त होती है।

कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्न हैं:—

(i) प्रो० मार्शल (Marshall) ने उपभोक्ता की बचत की परिभाषा इस प्रकार दी है - "किसी वस्तु से वंचित रहने के बजाय उपभोक्ता जो मूल्य देने को तैयार रहता है तथा वास्तव में जो मूल्य वह देता है उसका अन्तर ही संतोष की बचत की आर्थिक माप है। इसे उपभोक्ता की बचत कहा जा सकता है।"

(The excess of Price which he (consumer) would be willing to pay rather than go without the thing over that which he actually does pay, is the economic measure of this surplus satisfaction. It may be called Consumer's surplus.)

(ii) प्रो० मेहता (J. K. Mehta) के अनुसार, "किसी व्यक्ति को किसी वस्तु से मिलने वाली उपभोक्ता की बचत उस वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता और उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए त्यागी गयी उपयोगिता का अन्तर है। [प्रो० मेहता की परिभाषा मार्शल की परिभाषा से मिलती जुलती है अन्तर केवल शब्दों का है आशय एक ही है] इसी प्रकार की परिभाषा पेन्सन ने भी दी है।

(iii) प्रो० पेन्सन (Prof Penson) के अनुसार, "जो कुछ हम देने को तैयार हैं और जो कुछ हम वास्तव में दे देते हैं, इन दोनों के अन्तर को ही 'उपभोक्ता की बचत' कहा जाता है।"

(The difference between what we would pay and what we have to pay is called consumer's surplus.)

(iv) प्रो० टॉसिंग (Prof Taussing) के अनुसार "उपभोक्ता की बचत कुल उपयोगिता और कुल विनिमय मूल्य को मापने वाली राशियों के बीच का अन्तर है।"

(Consumer's surplus is the difference between the sum which measures total utility and that which measures total exchange value.)